

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय
वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह
ता:-10-01-2021(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: दशमःपाठनाम जटायोः शौर्यम्

श्लोक५. निवर्तय मतिं नीचां परदाराभिमर्शनात् ।

न तत्समाचरेद्धीरो यत्परोऽस्य विगर्हयेत् ॥

अन्वयः- (त्वम्) परदारा अभिमर्शनात् (स्वां) नीचां मतिम् निवर्तय

धीरः न तत् समाचरेत् यत् परः अस्य विगर्हयेत् ।

शब्दार्थः -

निवर्तय - हटा लो , मतिम् - विचार को , नीचां - गन्दी ,
परदारा - पराई स्त्री के , अभिमर्शनात् - स्पर्श दोष से ,
समाचरेत् - आचरण करना चाहिए , धीरः - बुद्धिमान, विगर्हयेत् - निन्दा
अर्थ-पराई नारी (पर स्त्री) के स्पर्श दोष से तुम अपनी नीच बुद्धि
(नीच विचार) को हटा लो , क्योंकि बुद्धिमान (धैर्यशाली) मनुष्य
को वह आचरण नहीं करना चाहिए, जिससे कि दूसरे लोग उसकी
निन्दा (बुराई) करें ।